बसंत की वार

ੴ सतगिुर प्रसादि॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥
करमि लिखिंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥
वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अम्रित फलु पाई ॥
मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥
नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥१॥

पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥
आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥
रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥
दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥
जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥२॥

किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥
जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥
कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥

अगमु अगोचरु साहबिो दूसरु लवै न लावै ॥

सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥३॥१॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com